मातृत्व की संवेदना से ओत–प्रोत : 'ऐ जिन्दगी तुझे सलाम'

डॉ. एकनाथ श्रीपती पाटील,
(राधानगरी महाविद्यालय, राधानगरी)
ग्राम–कुरुकली, तहसील–करवीर,
जिला–कोल्हापुर (महाराष्ट्र)
पिन– 416001

हरभजन सिंह मेहरोत्रा द्वारा लिखा 'ऐ जिन्दगी तुझे सलाम' उपन्यास किन्नर विमर्श के साथ स्त्री के मातृत्व की संवेदनशील अभिव्यक्ति है। यह मातृत्व अपनी कोखजाई बच्चे के प्रति नहीं बल्कि पागल भिखारन की कोखजाई बच्ची के प्रति है। उपन्यास के केन्द्र में उपन्यास की नायिका किन्नर रोशनी है जो काफी जद्दोजेहद से डी.एम. बन जाती है। रोशनी का जन्म पागल भिखारन के कोख से होता है। पागल भिखारन बच्ची का पालन करने असमर्थ है, कही बच्ची का अनिष्ठ न हो इसी विचार से रूपा का मातृत्व उस बच्ची को गोद लेने का निर्णय यथार्थ में उतार देता है। दुर्गा पूजा के मेले से रूपा के उस बच्ची को चुरा लिया जाता है। रूपा यह सदमा सह नहीं पाती, उसका मानसिक संतुलन बिगड़कर वह पागल बन जाती है। दूसरी ओर चुराई हुई बच्ची हिजड़ा है, इस वास्तविकता से परिचित चुरानेवाले रूख्सार बानों के जरिए बच्ची को किन्नर गुरु निर्मला के डेरे पहुँचा देते हैं। रज्जो नाम की किन्नर बच्ची को लालन–पालन, शिक्षा–दिक्षा से काबिल बनाती है। रज्जोद्वारा उठाये गए कष्ट–त्याग से रोशनी एक कामयाब, कर्तव्यदक्ष और संवेदनशील जिला मॅजिस्ट्रेट बन जाती है। प्रस्तुत उपन्यास इन्हीं दो स्त्रीयों के मातृत्व की संवेदनशील कहानी के साथ किन्नर रोशनी के जन्म से लेकर उसका समाज में प्रतिष्ठित बनने तक के संघर्ष को रेखांकित करता है।

प्रस्तुत उपन्यास की नायिका किन्नर रोशनी है, जिसका जन्म एक पागल भिखारन, जो यौन शोषण का शिकार बनी है, उसकी कोख से हुआ है। बच्ची का जीवित बचना तथा पगलिया से बच्ची की परवरिश संभव नहीं थी। लोग नवजात को यतीमखाने छोड़ आने रूपा को कह रहे थे। रूपा महानगरपालिका में जमादारीन

का काम करती है, जिसका कोई बच्चा जीवित बच नहीं पाया था। बच्ची को लेकर रूपा में मातृत्व जागृत होता है, "रूपा चमत्कृत है इस बात से कि इसी बच्चे की वजह से उसकी छातियों में दूध उतर आया है।"[1] रूपा के भीतर जागृत हुआ मातृत्व पगली के बच्ची को गोद लेने का निर्णय करता है। समाज तथा पति का विरोध, साथ ही बच्ची का नाजायज तथा किन्नर होने का पता लगने के बाद भी रूपा बच्ची को अपने सीने से चिपकाये रहती है। डॉ. रेशमी मुखर्जी रूपा के मातृत्व के संबंध में लिखती है, "यह माँ तब भी अपनी संतान को हृदय से चिपकाकर रखती है जब उसके हिजड़े होने का राज खुलता है। माँ के रूप में रूपा का चित्रण लेखक ने बड़ी मार्मिकता से किया है जो पाठकों के मन को भी सहानुभूति से मसृण कर देता है।"[2] कलुआ के धमकाने पर रूपा बच्ची को लेकर घर छोड़ती है। घर छोड़ चली गई रूपा को कलुआ मनाकर ले आता है। रूपा बच्ची को गोद लेने की कानूनी कार्रवाई पूरी करती है। घर में सुंदरकाण्ड का पाठ करवाती है, रिश्ते–नाते के लोगों को बुलाकर भोज खिलाती है और बच्ची का नाम मधू रखती है। अपने कोखजाई संतान के लिए जो संस्कार किये जाते हैं वे रूपा अपनी गोद ली किन्नर बच्ची के लिए करती है। यहाँ ध्यान देने की बात यह है कि नीरजा माधव के 'यमदीप' उपन्यास की नाजबीबी (नंदरानी) मेजर पिता की किन्नर बेटी है। महेंन्द्र भीष्म के 'मैं पायल' उपन्यास की पायल (जूगनी) मध्यवर्गीय क्षत्रिय वर्ग की किन्नर बेटी है। नंदरानी तथा जूगनी दोनों की सगी माताएँ होने के बाद भी इन दोनों का विस्थापन रूका नहीं। ये माताएँ अगर अपने परिवार के खिलाफ विद्रोह करके अपनी कोखजाई किन्नर बच्चियों का विस्थापन रोकने रोक सकती थी मगर ऐसा हुआ नहीं। दूसरी ओर रूपा जैसी निम्नवर्ग की महिला ने पगली के अनौरस किन्नर बच्ची को गोद लेकर उसका विस्थापन रोक दिया। इसलिए रूपा का मातृत्व बहुत अहमियत रखता है। उसकी यह मातृत्व की संवेदनशीलता मनुष्य को मानव बनाये रखने सहायक सिद्ध होती है। बच्ची को हिजड़ों का समूह उठाकर न ले जा सके इसलिए रूपा उनके डेरे पर जाकर उन्हें चढ़ावा दे आती है और हिजड़े भी रूपा के घर आकर बच्ची के मंगल कामना के लिए बधाई गाते हैं। रूपा बच्ची के भविष्य को लेकर सपने सजाने लगती है। दुर्गापूजा के मेले में वह अपने पति के साथ बच्ची को लेकर सम्मिलित होती है। मेले में रेल–पेल से धक्का खाकर कलुआ एक

औरत पर जाकर गिरता है, जिससे औरत कलुआ से झगड़ने लगती है। रूपा बच्ची को एक मेज पर रखकर बीच–बचाव कर झगड़ा खत्म करती है। वापस आकर देखती है तो बच्ची नदारद। "रूपा अपनी छाती पर दो हत्थड़ मारती फिर से रोने लगी।" बच्ची के अगवा हो जाने की रपट थाने में दर्ज की जाती है। बच्ची के न मिलने से रूपा की स्थिति दयनीय हो जाती है। उसका मातृ–हृदय बच्ची का अगवा होना सह नहीं सका। उसे ज्वर चढ़ जाता है और वह अपना मानसिक संतुलन खो बैठती है।

उपन्यास के दूसरे चरण की शुरुआत फ्लैशबैक शैली से तथा नायिका रोशनी का दसवीं परीक्षा में प्रदेश में पहला स्थान प्राप्त करने से होती है। ये रोशनी रहाणे कौन है? यह सवाल उपन्यास के दूसरे चरण को पढ़ने से पाठक के मन में उत्पन्न होता है। आगे पढ़ते जाने से पता चलता है कि यह वहीं बच्ची है जो दुर्गापूजा के मेले से अगवा हुई थी। यहाँ लेखक पाठकों की जिज्ञासा बढ़ाने सफल हुए दिखाई देते हैं। रोशनी की परवरिश किन्नर डेरे पर रज्जो मौसी से होती है। रज्जो किन्नर है, वह बच्चा जन नहीं सकती मगर उसका मातृ हृदय रोशनी को अपनी बेटी मानता है। महेन्द्र भीष्म किन्नरों के जननांगों की जानकारी देते हुए लिखते हैं, "किन्नरों को मासिक धर्म नहीं होता क्योंकि हमारे गर्भाशय तो होता ही नहीं है,... योनी की बनावट भी स्त्रीयों की तरह होती है, मामूली–सा अन्तर होता है, जिसे देखकर ही समझा जा सकता है और सामान्य तरीके से सहवास भी किया जा सकता है। ऐसे किन्नर पूर्ण रूप से एक स्त्री की भाँति चरम पर पहुँच कर स्खलित होती है। गर्भाशय न होने के कारण केवल बच्चा पैदा नहीं कर सकती।"[3] रोशनी रज्जों की कोखजाई न होने के बाद भी मातृत्व से भरा उसका हृदय रोशनी को अपने धंधे से अलग रखकर उसे शिक्षा की ऊँची तालीम देने का भरसक प्रयास करता है। रोशनी को लड़की समझकर अगवा किया था पर उसके किन्नर होने की वास्ताविकता सामने आनेपर चुरानेवाले उसे मार देना चाहते थे। रूख्सार बानों ने बच्ची को उनसे लेकर किन्नर निर्मला गुरु के डेरे पहुँचाया। डेरे पर जलसे का आयोजन होकर बच्ची का नाम 'रज्जो रहाणे की बेटी रोशनी रहाणे' किया जाता है। रज्जों उसका लालन–पालन किसी धनाड्य परिवार में पलनेवाले बच्चे की तरह करती है। पढ़ने में तेज रोशनी किन्नर होने के कारण स्कूली मित्रों, सिपाही, 'अब

हिजडे पढेंगे हमारे स्कूल।' की टिप्पणी की शिकार बन निराश तथा हतोत्साहित होती है। वह भगवान से कहती है, "हे प्रभू! जिस अभिशप्त जीवन को जीने के लिए बाध्य है। ऐसा शरीर दोबारा मत देना।"[4] लेकिन रोशनी जल्द–ही समझ जाती है कि, 'लोगों की मानसिकता को बदला नहीं जा सकता।' उसे इन्हीं लोगों के बीच रहकर अपने लक्ष्य की प्राप्ति करनी है। रोशनी किन्नर समाज के उन्नती के लिए उनकी सोच में बदलाव तथा उनके इरादे मजबूत बनाकर आगे बढ़ाना चाहती है। रोशनी के इन बातों का प्रभाव निर्मला गुरु पर होता है, 'अब से कोई भी बच्चा बाम्बे सेण्ट्रल के इस डेरे में आयेगा उसे रोशनी की तरह अच्छी तालीम दी जाएंगी।' डेरे की अन्य किन्नर रोशनी को धंदे में लगा देने रज्जों को उकसाती रहती है, मगर रज्जों किसी की बात पर ध्यान नहीं देती, बल्कि रोशनी को पढ़ने के लिए प्रेरित कर उसे पढ़ाई के अतिरिक्त ढेर सारी किताबें लाकर देती है। रोशनी भी पूरे मनोयोग से पढ़ती और हर साल क्लास में अव्वल आती है।

रोशनी के किन्नर होने की जानकारी नविता को होकर भी दोनों की दोस्ती ग्यारहवीं कक्षा से बनी रही। दोनों अपनी पढ़ाई और करियर को लेकर अक्सर चर्चा करती है, "मैं तो यही सोच रही हूँ बीटेक करने के बाद युनियन पब्लिक सर्विस कमीशन में बैठूँगी।' नविता कह रही थी, 'तू क्यों नहीं बैठती यूनियन पब्लिक सर्विस कमीशन कॉम्पीटीशन में।"[5] रोशनी नविता की बात पर अभिज्ञान सर से सलाह–मशवरा लेकर अपनी योजना बनाती है। रोशनी एक ऐसे प्रतिकूल माहौल में रहकर पढ़ाई जारी रखती है जहाँ के आचरण, क्रिया–कलाप पढ़ाई के लिए कतई ठीक नहीं थे। संघ लोकसेवा आयोग के लिए किन्नर अयोग्य समझने तथा कोर्ट में उसके संबंध के मुकदमें प्रलंबित होने की बातें जानकर रोशनी निराश होती है। रज्जो मौसी और नविता उसका धीरज बाँधने का कार्य करती है। 'उसे लगा रज्जो मौसी, नविता उसके बहुत अच्छे पथ प्रदर्शक है।' नविता उसे लेक्चरर, अध्यापक, लेखक तथा मेडिकल क्षेत्र में नाम कमाने की सलाह देती है। यहाँ एक बात महत्त्वपूर्ण है, जिन किन्नरों को पढ़ने का सुअवसर नहीं मिला उन्होंने दूसरो के बच्चों को पढ़ाने का कार्य किया है। रज्जो ने रोशनी को पढ़ाने का कार्य किया है, उसीतरह 'यमदीप' उपन्यास के नाजबीबी द्वारा पगली की अनाथ बच्ची सोना की पढ़ाई के लिए कष्ट उठाए हैं। इससे यह स्पष्ट होता है कि किन्नरों को अब शिक्षा

का महत्त्व समझने लगा है। पढ़ाई लिखाई के साथ रोशनी सांस्कृतिक दृष्टि से संपन्न बने इसलिए उसे नृत्यगुरु से नृत्य की शिक्षा दिलवाती है। "रज्जो मौसी ने माँ की तरह परवरिश ही नहीं की अपनी पूरी जिन्दगी उसके बेहत्तर के लिए लगा दी। वरना इतनी मँहगी पढ़ाई करना हर एक के बस का थोड़े ही है।"[6] रोशनी के जीवन में रज्जो का स्थान अनन्यसाधारण है। वह उसे एक सगी माँ से भी बढ़कर प्यार देती है। उसके त्याग और तपस्या ने रोशनी के जीवन में शिक्षा का दीप प्रज्वलित हुआ और रोशनी समाज जीवन में प्रतिष्ठित बनी दिखाई देती है।

हिजड़ों के सम्मेलन में भाग लेने गई निर्मला गुरु और रज्जो मौसी का रेल दुर्घटना में मृत्यु हो जाता है। रज्जो की मृत्यु रोशनी के लिए बहुत बड़ा आघात था। इस आघात से उभर पाना रोशनी के लिए मुश्किल था। उसके जीवन का संबल यकायक चले जाने से रोशनी असहाय, एकाकी और दुःखी बनती है। उसके जीवन में रज्जो की जगह और कोई नहीं ले पायेंगी इसका अहसास रोशनी को हो जाता है। रज्जो ने समझाई बाते, 'जल में रहकर मगरमच्छ से बैर नहीं' याद आती है। निर्मला गुरु के मृत्यु के बाद डेरे का गुरुपद सुल्ताना के पास आ जाता है। सुल्ताना प्रतिगामी विचारों तथा उसका जरायम पेशे के लोगों से संबंध है। वह अपने इच्छानुसार डेरे की अन्य किन्नरों को चलाती है। उसके दंबगई प्रवृत्ति के विरोध में कोई कुछ बोल नहीं सकती। रोशनी को वह अपने परंपरागत धंधे में लगाना चाहती है। उसके लिए रोशनी की पढ़ाई महत्त्वपूर्ण नहीं है। सुल्ताना अपने परंपरागत घेरे से बाहर आना नहीं चाहती और न ही किसी को आने देना चाहती। रोशनी को लगता है कि आखिर उसे बधाई तथा भीख माँगने क्यों मजबूर किया जा रहा है? सुल्तान के पास वह अपना विरोध प्रकट करती है, "तो फिर भीख माँगने का धन्धा क्यों करवा रही है आप?"[7] 'मैं पायल' उपन्यास की पायल भी मोना किन्नर के पास बधाई गाने, ताली पीटने और भीख माँगने जाने का विरोध करती है, "मैं एक किन्नर हूँ, तो क्या किन्नर होना अपराध है, जो उसे उसके स्वभाव के विपरीत कार्य करने के लिए विवश किया जा रहा है। क्या एक किन्नर को बधाई टोली के अलावा अन्य कार्य–दायित्व नहीं सौंपे जा सकते।"[8] पायल ने अपने भीतर कई हुनर विकसित कर अपनी जीविका चलायी है। रोशनी में भी पढ़ने–लिखने का हुनर है, वह पढ़–लिखकर अपने जीवन में कामयाब बनना चाहती है लेकिन

सुल्ताना उसे परंपरागत घृणास्पद घेरे से बाहर आने नहीं दे रही है। ऐसे में रोशनी को अपने माँ–बाप की रह–रहकर याद आती है। उसे लगता है कि अगर उसके माँ–बाप का पता लग जाएगा तो क्या वे उसे अपनाएँगे? और वह स्वयं ही उत्तर देती है–नहीं। क्योंकि हिजड़ा बच्चों के माँ–बाप उन्हें स्वयं हिजड़ों के डेरे दे आते हैं। उपन्यास में ऐसे कई जगह हैं जहाँ रोशनी ने अपने माँ–बाप को लेकर किया विलाप आत्मालाप शैली में चित्रित हुआ है।

रज्जो की मृत्यु का मुआवजा सीधे रोशनी को मिलने से सुल्ताना क्रोधित होकर रोशनी को धंदे के लिए चले जाने का और कमाई का एक चौथाई गुरु के सामने पेश करने का आदेश देती है। सुल्ताना ने उसपर डेरे के कायदे कानून का सिकंजा कस लिया। निर्मला गुरु और रज्जों का वह स्थान सुल्ताना रोशनी के लिए ग्रहण न कर सकी। उसके मन में रोशनी के प्रति मातृत्व भाव उत्पन्न होने के बदले प्रतिशोध, घृणा, तिरस्कार के भाव ही उत्पन्न हुए। रोशनी अन्य किन्नरों के साथ धंधे के लिए जाने लगती है मगर धंधे के हथकण्डों से अनभिज्ञ। जजमानों से पैसा वसूली के लिए किसतरह बेशर्म बनना, भीख माँगना, अपने लटके–झटके दिखाना, उन्हें रिझाना, उनके सामने ओछी हरकते तथा गन्दे इशारे करना यह सब रोशनी के बस की बात नहीं थी। धंधे के लिए जाने से उसकी पढ़ाई पर असर पड़ने लगा। रोशनी अपना विरोध सुल्ताना के पास करती है मगर स्वयं परंपरागत घेरे से बाहर न आनेवाली दूसरों को कैसे बाहर निकलने देंगी, "पढ़कर तू कौन–सा तीर चला लेंगी। यह हमारा आदिकाल से चला आ रहा पुश्तैनी काम है। भगवान जी ने इसी वास्ते हमारी रचना की है। हमारी बाँणी में बहुत जस है। हमें मंगलामुखी माना जाता है।"[9] सुल्ताना के तानाशाही प्रवृत्ति का विरोध रानी चाची करती है तो उसे वह रातोरात गायब करवाती है। रोशनी का स्कूल आना बन्द हुआ देखकर नविता और उसके सर डेरे में आकर सुल्ताना को समझाते हैं जिससे रोशनी का स्कूल आना शुरू हुआ। दोपहर का समय धंधे में चला जाने से रोशनी देर रात तक पढ़ाई जारी रखती है और अपने लक्ष्य प्राप्ति की ओर बढ़ने का इरादा मजबूत बनाती है। "जिस रास्ते पर निकल गई है कमजोर पडकर पीछे नहीं लौटेंगी। रज्जों मौसी की उम्मीदों पर खरा साबित होकर दिखायेंगी।"[10]

उपन्यास के तीसरे चरण की शुरुआत भी फ्लैशबैक शैली में तथा रोशनी का जिलाधिकारी बनने और अपने अधिनस्त अधिकारियों को बेहतर प्रशासन के लिए संबोधित करने से हुई है। इस तीसरे चरण में रोशनी एक कर्तव्यदक्ष, ईमानदार, बुद्धिमानी, परिश्रमी और संवेदनशील अधिकारी के रूप में उपन्यास में उपस्थित हुई है, जो लेखक की सकारात्मक सोच है। भ्रष्ट लोगों को रोशनी के उत्तम प्रशासन का भय सताने लगता है। जीवन में अपमान, उपेक्षा, तिरस्कार सहनेवाली रोशनी स्कूली जीवन में अव्वल आने के साथ प्रशासनिक सेवा में भी सर्वोच्च स्थान की अधिकारी बनी। डी.एम. रोशनी को हिजड़ा कहकर कुछ लोग उसे नीचा दिखाने तथा उसका मनोबल तोड़ने का प्रयास करते हैं। नविता की शादी में दुल्हा–दुलहन को आशीर्वाद देने की रस्म एक किन्नर द्वारा पूरी करनी थी। नविता की बुआ डी. एम. रोशनी को इसके लिए बुलाती है, 'अब हम दूसरे खुसरों को कहाँ से बुलाये।' और आर्शीवाद के बाद दुल्हा–दुलहन पर वारे गए रुपये रोशनी के हाथ थमा देना, लोगों का डी.एम. रोशनी के प्रति देखने का नजरिया स्पष्ट करता है। रोशनी भी अपनी मित्र के खातिर इस अपमान के घूँट को पीकर चूप रहती है। रोशनी और नविता दोनों ने संघ लोकसेवा आयोग की परीक्षा एक साथ उत्तीर्ण की। रोशनी जिला मॅजिस्ट्रेट और नविता पुलिस अधिक्षक पद के लिए चुन ली गई। सुल्ताना से मिली यंत्रणाओं के बाद भी डी.एम. रोशनी के मन में उसके प्रति कोई प्रतिशोध की भावना नहीं है उल्टे नये डेरे के निर्माण में रोशनी सुल्ताना को सहायता करती है। इससे रोशनी में मानवीय संवेदना तथा रिश्तों की गरिमा होने की बात अधोरेखित होती है। कॉलेज के दिनों में रोशनी पर एकतरफा प्रेम करनेवाला अक्षत तथा रोशनी की वास्तविकता का पता लगने से अक्षत का रोशनी से दूर रहना और बिना बताये चले जाना, इस बात का रोशनी को गम है। स्कूली वैन हादसे में मृत बच्चे के माता–पिता का शोक देखकर रोशनी को अपने माँ–बाप की याद आती है। उसे लगता है जब उसे अगवा की गई तब उसके माँ–बाप की स्थिति कैसी रही होंगी। उसका हिजड़ा होने के कारण अपने आपसे संवाद जारी है। उसका विलाप आत्मालाप शैली में व्यक्त हुआ है, "सिर्फ बच्चे पैदा कर देने से ममत्व नहीं उत्पन्न होता। ममता तो अपने अंदर किसी बच्चे के लिए उठनेवाली एक शाश्वत भावना है। इतनी–सी बात अपने आप को पूर्ण कहे जानेवाला मनुष्य क्यों नहीं समझता है।

क्यों हम लोगों को तिरस्कृत समझा जाता है।"[11] रोशनी का यह विलाप जननांग विहीन बच्चों के बारे में लोगों में सकारात्मक सोच तथा वैज्ञानिक दृष्टिकोन बनाने सहायक सिद्ध जरूर होगा। यह वैज्ञानिक दृष्टिकोन माँ–बाप में न होने के कारण वे अपने किन्नर बच्चे से मुक्ति पाने हेतु अपने से काटकर दूर फेंकते हैं। अंधे, बहरे या अपाहिज बच्चे को परिवार में स्थान है तो फिर किन्नर बच्चे को क्यों नहीं? अपनी विवशता एक किन्नर अपनी माँ के सामने व्यक्त करता है,

"लज्जा का विषय क्यों हूँ अम्मा मेरी,
अंधा, बहरा या मनोरोगी तो नहीं था मैं।
सारे स्वीकार हैं परिवार समाज में सहज
मैं ही बस ममतामय गोद से बिछड़ा हूँ।"[12]

किन्नरों में भी मानवीय संवेदना आम मानव जैसी है फिर क्यों उनके साथ तुच्छता का व्यवहार होता है? स्त्री के जीवन में दो महत्त्वपूर्ण बातें होती है, एक उसका विवाह होना, दूसरा उसंका माँ बनना, जिससे उसका वजूद अपना नहीं रहता। उसका वजूद उसके पति, बच्चे और परिवार को समर्पित होता है। नविता की शादी में रोशनी को अपने वजूद की निरर्थकता का बोध होता है और वह अपने आप से सवाल करती है, "यह तीसरी जमात क्यों आयी है धरती पर। कोई तो उसका ठोस कारण होना चाहिए। हर प्राणी जीवोत्पत्ति पर लगा है, जिससे इतने सुंदर संसार का अस्तित्व है। तीसरा दर्जा क्या तालियाँ बजाकर नाचने गाने तक ही है।... सारे संबंधों और सरोकारों से महरूम। चुराये गये रिश्तों के सहारे सारी जिन्दगी जीने को मजबूर, न कोई चाची, न मौसी, न भाई–बहन। जन्म देनेवाले माँ–बाप ही जब इनके नहीं हो पाये तो औरों का दम क्या भरना।"[13] रोशनी अपने वजूद तथा अपने रिश्ते नातों की निरर्थकता के बारे में भावूक होकर सोचती है। उसे लगता है सारे संबंधों के होते हुए भी इस अधूरी देह ने उसे या उस जैसों को रिश्ते–नातों की गरिमा से काटकर दूर फेंक दिया है। भावूक बनी रोशनी की आँखों से आँसू बहना उसका इंसान होना प्रमाणित करता है जो यह समाज इंसान मानने तैयार ही नहीं हैं। सपना मांगलिक जी ने किन्नरों के दर्द को व्यक्त करते लिखा है,

"मेरे हक, खुशियाँ, सब सपने, माँग रहा हूँ कबसे
छीन लिया इंसा का दर्जा, दुआ माँगते मुझसे।"[14]

सुभाष अखिल भी किन्नरों को इंसान समझकर उनके साथ मानवता का रिश्ता बनाये रखने के पक्ष में दिखाई देते है और सवाल करते हैं, "क्या यौनिक विकलांगता के चलते किसी इंसान को 'इंसान' होने से भी वंचित किया जा सकता है।"[15] संबंधों की निरर्थकता का अहसास इस बात से भी होता है कि किन्नरों की शादी अरावन नामक देवता के मूर्ति से होना और अगले दिन उनका विधवा बनना। अपने संबंधों की गरिमा महसूस करने हेतु रोशनी अपने माँ–बाप की खोज शुरू करती है। उसे अगवा करनेवाला मुन्ना नामक व्यक्ति बम्बई आ जाने की खबर जैसे ही रोशनी को मिलती है, वह बम्बई रूख्सार बानों के पास पहुँचती है। अपने माँ–बाप से मिलकर संबंधों की गरिमा महसूस करना चाहनेवाली रोशनी भाव विव्हल बनती है। उसके भावनाओं की बांध आत्मालाप शैली में टूट जाता है, "माँ तुम कैसी होंगी...मेरी याद तुम्हें कभी आयी होंगी या भूल चुकी होंगी।...उसके पापा गर्व से भर जायेंगे, जब उन्हें पता चलेगा उनका बच्चा जो किन्नर था वह अब डी.एम. है। पूरे जिले की बादशाहत है उसके हाथों में।"[16] रोशनी मुन्ना से मिली जानकारी तथा नविता की सहायता से कानपुर पहुँचती है। वहाँ के थाने में दर्ज की गई रपट के अनुसार तहकीकात करती है तो उसे यह जानकारी मिलती है कि उसके पिता मनोज (कलुआ) वाल्मिकी की मृत्यु हुई है और माँ रूपा बच्ची के अपहरण का सदमा बर्दाश्त न कर सकने के कारण पागल बनी है। इस जानकारी से रोशनी को धक्का–सा लगता है और उसके रिश्तों की गरिमा महसूस करने की बातें एक सपना बनकर रह जाती है। वह अपने आप को संभाल लेती है। उसे अपने माँ के मिलने की आशा है इसलिए वह एस.पी. त्यागी को अनाथालय, पागलखाने में उसके खोज की सलाह देती है। उसके माँ–बाप का न मिलना, इसलिए स्वयं को अभागन मानना, उसके सारे रिश्ते–नाते के लोगों का उसे छोड़ चला जाना, रंजितनगर रेल्वे कॉलनी के लोगों द्वारा रूपा की अगवा की बच्ची मधू (रोशनी) को पहचानना तथा रोशनी द्वारा एक फेकी गई, तिरस्कृत नवजात किन्नर बच्ची को गोद लेकर पूरे मानव समाज के सामने आदर्श रखना आदि बातों से उपन्यास का अंत, सुखांत तथा दुखांत दोनों तरह की मिलीजुली भावनाओं से हुआ दिखाई देता है।

प्रस्तुत उपन्यास द्वारा लेखक ने किन्नर विमर्श के साथ कुछ महत्त्वपूर्ण विषयों को पाठकों के सामने रखा है। इसमें लेखक स्कूली शिक्षा, प्राइवेट स्कूलों की

मुनाफा कमाने की वृत्ति, प्राइवेट स्कूली वैन से सफर करनेवाले स्कूली बच्चों की सुरक्षितता, देशी शराब से गरिब शराबियों की मौत आदि बातों को लेखक हमारे सामने रखते हैं। जन्म से अंधे–लंगडे–गूंगे–बहरों को हम अपनाते हैं। दिव्यांगों की श्रेणी मे रख सभी सुविधा मुहैया करते हैं। तो फिर जननांग विहीन बच्चों का तिरस्कार हम क्यों करते हैं? इन जननांग विहीनों को अपनाकर, उन्हें भी दिव्यांगों की श्रेणी में रखने की बात लेखक यहाँ करते हैं। तथा किन्नरों में भी मानव–सुलभ भाव–भावनाएँ होने के बाद भी उनके साथ हमारा पशुवत व्यवहार क्यों है? तथा शारीरिक तथा बौद्धिक क्षमता में आम मानव जैसा सामर्थ्य होने के बावजूद भी किन्नरों को भीख माँगने क्यों मजबूर किया जाता है? आदि सवाल लेखक यहाँ उठाते हैं।

लेखक यहाँ किन्नर समाज की महत्त्वपूर्ण बात को अधोरेखित करते हैं कि किन्नर समूह के डेरे जात–धर्म संप्रदाय की संकुचित भावना से मुक्त हैं। यहाँ सभी संप्रदाय, धर्म तथा जात के किन्नर एकता की भावना से मिल–जुलकर रहते हैं। नकली हिजडों का असली हिजडों की दुनिया में प्रवेश से असली हिजडों का धंधा चौपट होना, नकली हिजड़ों की बदनीयत, जिस्मफरोशी, नशापान आदि से किन्नर समाज का बदनाम होना, इससे बचने के लिए सरकार द्वारा किन्नरों की शारीरिक चिकित्सा होना आवश्यक लगता है। किन्नर बच्चों को उनके बचपन में घरवालों से मिली यातनाएँ, किन्नर डेरे पर आनेवाले हर बच्चे को इंसान समझकर उसकी परवरिश करना, हिजड़े की मृत्यु के बाद उसके शव को जूतो–चप्पलों से पीटना, शोक न मनाना, हिजड़ों द्वारा अपना घाघरा उठाना अपशकुन मानना तथा वे नाराज न हो इसलिए पैसे देकर उन्हें संतुष्ट करना, पैसा वसूली के लिए किन्नरों का बेशर्म बन गंदी हरकतें करना, किन्नरों की बेशर्मी के कारण ही उनकी इज्जत की रक्षा होना, नहीं तो आम लड़कियों की तरह उनकी भी इज्जत लूटने की बात, किन्नर गुरु का जरायम पेशे के लोगों से साँठ–गाँठ, किन्नरों द्वारा अपने गुरु की चापलूसी, उनके गुट तथा किन्नर के दिनभर की कमाई में से एक चौथाई हिस्सा गुरु को देने आदि बातों से लेखक उपन्यास का ताना–बाना बुनते हुए दिखाई देते हैं।

प्रस्तुत उपन्यास रोचक तथा पाठकों की जिज्ञासा बढ़ाता रहता है जिसे आदि से अंत तक पढ़े बगैर पाठक नहीं रह सकता। हरभजन सिंह मेहरोत्रा जी की क्षमता और सामर्थ इस बात में दिखाई देता है कि वे पाठक के मन में माँ के ममता की संवेदना निर्माण करने सक्षम हुए हैं। प्रस्तुत उपन्यास की भाषा खड़ीबोली मानक हिंदी के साथ इसके पात्र कलुआ, रूपा के मुँह से बोलचाल की अवधी बोली भाषा का प्रयोग हुआ है, जैसे, 'दुधवा पिहै ...मोर बिटेवा भुखाइन हेय,' 'जरा इसे देख हम इसका दुधवा बना देयीब' आदि प्रस्तुत उपन्यास में किन्नरों का 'धंधे के लिए जाना' यह शब्द प्रयोग गलत अर्थ को ध्वनित करता है, उसके बदले अगर 'बधाई के लिए जाना' इसतरह का प्रयोग उचित होता। उपन्यास के पहले चरण में कथात्मक शैली का तथा दूसरे और तीसरे चरण में कथात्मक शैली के साथ प्लैशबैक शैली का और रोशनी का अपने माँ–बाप के प्रति व्यक्त प्यार तथा किन्नर होने के कारण उसे भुगतने पड़े दुःख का विलाप आत्मालाप शैली में अभिव्यक्त हुआ दिखाई देता है। उपन्यास के दो सौ पृष्ठों में लिखी इस कहानी का अधिकतर हिस्सा रूपा के मातृत्व की कहानी तथा रज्जो द्वारा रोशनी के बेहत्तर भविष्य के लिए उठाये गए कष्ट–त्याग को अभिव्यक्त करता है इसलिए उपन्यास का शीर्षक 'ऐ जिन्दगी तुझे सलाम' के बदले 'माँ तुझे सलाम' ऐसा अगर किया जाता तो वह अधिक उचित और अर्थपूर्ण ध्वनित हो जाता। प्रस्तुत उपन्यास एक किन्नर बच्ची के जन्म से लेकर उसका समाज में प्रतिष्ठित बनने तक, उसके द्वारा की गई जद्दोजहद की कहानी रोचक तथा पाठकों की जिज्ञासा बनाये रखने सफल सिद्ध हुई दिखाई देती है।

निष्कर्ष :–

प्रस्तुत उपन्यास में किन्नर भी मनुष्य की संतान है, उनमें भी मानव सुलभ भाव–भावनाएँ होने के कारण वे भी मानव है, वे भी इंसान के बच्चे समझनेवाली संवेदना जो एक माँ में दिखाई देती है, वही माँ के ममता की संवेदना लोगों में निर्माण करना हरभजन सिंह मेहरोत्रा जी का प्रमुख उद्देश्य दिखाई देता है जिसमें वे सफल हुए हैं। प्रस्तुत उपन्यास मनुष्य के भीतर छिपी मनुष्य के किन्नर बच्चे के प्रति स्थित असहिष्णुता का चित्रण करता है। किन्नर अपने माँ–बाप के रिश्तों की गरिमा महसूस करने से वंचित रहने के कारण उनके दुःख की अभिव्यक्ति तथा उन्हें

अपने रिश्तों की निरर्थकता का अहसास होने का चित्रण प्रस्तुत उपन्यास करता है। प्रस्तुत उपन्यास में किन्नरों के प्रति लोगों का देखने का दृष्टिकोन, समाज में उनकी हो रही वंचना, तिरस्कार, उपेक्षा, पीड़ा, दुःख तथा उनका शोषण आदि को चित्रित करनेवाला प्रामाणिक दस्तावेज होने के साथ तिरस्कार, उपेक्षा और वंचना से भरे माहौल में एक किन्नर का स्वयं को प्रतिष्ठित करने की संघर्षपूर्ण कहानी को प्रस्तुत करता हुआ दृष्टिगोचर होता है।

संदर्भ :

1. हरभजन सिंह मेहरोत्रा, ऐ जिन्दगी तुझे सलाम, अमन प्रकाशन, कानपुर, प्र.सं. 2020, पृष्ठ 36
2. https://newskranti.com (उन्नती के बंद किवाडों पर दस्तक चुनौतीपूर्ण किन्नर समाज–डॉ. रेशमी पांडा मुखर्जी)
3. महेन्द्र भीष्म, मैं पायल, पृष्ठ 83
4. हरभजन सिंह मेहरोत्रा, ऐ जिन्दगी तुझे सलाम, पृष्ठ 87
5. वही, पृष्ठ 99
6. वही, पृष्ठ 110
7. वही, पृष्ठ 134
8. महेन्द्र भीष्म, मैं पायल, पृष्ठ 99
9. हरभजन सिंह मेहरोत्रा, ऐ जिन्दगी तुझे सलाम, पृष्ठ 134
10. वही, पृष्ठ 142
11. वही, पृष्ठ 156
12. नीरजा माधव के 'यमदीप' में खुला किन्नरों के जीवित यथार्थ का तिलतिल मरता राज– किरण ग्रोवर, सेतु–द्वैभाषिक पत्रिका–मार्च 2017
13. हरभजन सिंह मेहरोत्रा, ऐ जिन्दगी तुझे सलाम , पृष्ठ 172
14. हिजडे की व्यथा –सपना मांगलिक hindi.webdunia.com.
15. हरभजन सिंह मेहरोत्रा, ऐ जिन्दगी तुझे सलाम, (किन्नर जीवन की स्वीकार्यता है : ऐ जिन्दगी तुझे सलाम –सुभाष अखिल), पृष्ठ 11
16. वही, पृष्ठ 182